

पापोंके दुष्परिणाम दूर करनेके लिए प्रायश्चित

भूमिका

साधारणतः यह कहा जा सकता है कि धर्मशास्त्रकी दृष्टिसे निषिद्ध अथवा निन्दित कर्म करना, पाप है ! पापसे व्यक्तिका पतन होता है । पापसे रोग, दरिद्रता आदि भोगने पडते हैं । पापकर्मके फलसे कोई नहीं बचता । पापकर्मोंके विषयमें पश्चाताप व्यक्त कर, धर्मशास्त्रमें बताया गया दण्ड भोगनेपर पापसे छुटकारा हो सकता है ।

धर्मशास्त्रमें लिखा दण्ड भोगनेको ही 'प्रायश्चित' कहते हैं । अन्य ग्रन्थोंमें इतना ही कहा गया है कि 'पापको स्वीकार करने, दान-धर्म करने और पश्चाताप होनेसे पापी पापमुक्त होता है ।' परन्तु, हिन्दू धर्मने इसके आगे विविध पापोंकी सूची बनाकर, पापकी तीव्रतानुसार विविध प्रकारके प्रायश्चित (देहान्त प्रायश्चित भी) बताए हैं । पापका दुष्प्रभाव दूर करनेके लिए कुछ धर्मशास्त्रीय मार्ग इस ग्रन्थमें बताए गए हैं ।

पुण्य-पापात्मक कर्मोंसे उत्पन्न होनेवाले सुख-दुःखके बन्धनसे परे जाकर, निरन्तर सच्चिदानन्द अवस्था अनुभव करनेके लिए ऐसे कर्म करने पडते हैं जिससे कर्मफल न मिले । कर्मोंसे होनेवाली हानि टालनेके लिए क्या करें, यह भी इस ग्रन्थमें बताया गया है ।

यह ग्रन्थ पढनेसे पाठकोंको पाप-पुण्यके परे देखनेकी एक नई दृष्टि मिले तथा पाप-पुण्यके परे जाकर आनन्द प्राप्त करनेके लिए सदैव साधना करनेकी प्रेरणा मिलती रहे, यह श्री गुरुसे प्रार्थना ! - संकलकनकर्ता

(सनातनकी 'कर्मयोग' ग्रन्थमालाकी सामायिक भूमिका 'कर्मका महत्त्व, विशेषताएं एवं प्रकार' इस ग्रन्थमें दी है ।)

अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण सूत्र '* ' चिन्हमें दर्शाए गए हैं ।)

१. पाप	१०
* समष्टि पाप और युद्ध तथा नैसर्गिक आपत्ति	१०
* पापका महत्त्व	१२
* पाप न लगना	१३
* पापके दुष्परिणामोंका निराकरण कैसे करें ?	१७
२. पाप-पुण्य दोनोंसे सम्बन्धित सूत्र	४१
* पुण्यके लिए विचार पर्याप्त ; परन्तु पापके लिए क्रिया आवश्यक	४१
* पाप-पुण्य लगनेके नियम	४३
* सन्तोंके पाप और पुण्य	४५
* पाप-पुण्यके भागीदार	४५
* 'पाप एवं पुण्य' 'लेन-देनके न्याय'से भी सूक्ष्म हैं ।	४६
* विविध कर्म एवं पाप-पुण्य - नित्य, विहित एवं निषिद्ध कर्म	४७
* पाप-पुण्य एवं आयु	४९
* युगके अनुसार सत्य आचरण एवं आयु	४९
* पाप-पुण्य एवं आध्यात्मिक उन्नति	५१
३. कर्मकी अपरिहार्यता	५२
४. कर्मके परिणामोंसे बचनेके उपाय	५५
५. कर्म कबतक करें ?	५७
६. कर्मसे मुक्त होना	६०
७. पाप-पुण्यके परे जानेके लिए साधना आवश्यक !	६०